आईसीएआर- सीफेट ने किसान दिवस 2025 मनाया; विकसित भारत की परिकल्पना एवं VB-G RAMG कार्यक्रम पर प्रकाश डाला

लुधियाना, 23 दिसम्बर 2025:

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद–केंद्रीय कटाई-उपरांत अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (आईसीएआर-सीफेट) ने 23 दिसम्बर 2025 को किसान दिवस का आयोजन किया। इस अवसर पर किसानों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुनः दोहराते हुए राष्ट्र निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया गया। यह कार्यक्रम भारत रत्न चौधरी चरण सिंह—किसानों के अधिकारों के प्रखर समर्थक—की विरासत को सम्मान देने की भावना से आयोजित किया गया, साथ ही भारतीय कृषि के समक्ष विद्यमान समकालीन चुनौतियों एवं अवसरों पर भी विचार-विमर्श किया गया।

किसान दिवस का आयोजन "विकसित भारत @2047" के राष्ट्रीय दृष्टिकोण के अनुरूप किया गया, जिसका वर्ष 2025 का विषय था: **"विकसित भारत 2047 – भारतीय कृषि के वैश्वीकरण में एफपीओ की भूमिका"**। इस विषय के माध्यम से किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) की बढ़ती भूमिका पर प्रकाश डाला गया, जो किसानों की आय बढ़ाने, बाजार तक पहुंच सुदृढ़ करने, मूल्य संवर्धन को प्रोत्साहित करने तथा भारतीय कृषि को वैश्विक बाजारों में प्रतिस्पर्धी बनाने में सहायक हैं।

इस कार्यक्रम में पंजाब एवं कश्मीर से 150 से अधिक किसान एवं अन्य हितधारकों ने सहभागिता की। आईसीएआर- सीफेट के निदेशक, डॉ. नचिकेत कोतवालीवाले ने किसान दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए वर्ष 2025 की थीम की विस्तृत जानकारी दी तथा सतत एवं समावेशी कृषि विकास के लिए एफपीओ के माध्यम से सामूहिक प्रयास, एकत्रीकरण और पेशेवर प्रबंधन की आवश्यकता पर बल दिया।

कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों के लिए **विकसित भारत–गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन (VB-G RAMG)** कार्यक्रम का सजीव वेबकास्ट प्रदर्शित किया गया, जिससे ग्रामीण आजीविका और अवसंरचना विकास के लिए प्रस्तावित परिवर्तनकारी ढांचे की जानकारी प्राप्त हुई। प्रौद्योगिकी हस्तांतरण प्रभाग के प्रमुख, डॉ. रणजीत सिंह ने VB-G RAMG कार्यक्रम की प्रमुख विशेषताओं की जानकारी देते हुए आजीविका सुरक्षा सुदृढ़ करने, ग्रामीण अवसंरचना सृजन के साथ समन्वय, जल सुरक्षा, जलवायु अनुकूलन तथा आधुनिक डिजिटल एवं स्थानिक योजना प्रणालियों के साथ इसके तालमेल पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में बदलती ग्रामीण अर्थव्यवस्था, रोजगार एवं आजीविका रणनीतियों के पुनर्मुखीकरण की आवश्यकता तथा आईसीएआर- सीफेट जैसी संस्थाओं की भूमिका पर भी विचार-विमर्श किया गया, जो कटाई-उपरांत प्रौद्योगिकियों, मूल्य संवर्धन, उद्यमिता एवं क्षमता निर्माण के माध्यम से किसानों को सहयोग प्रदान करती हैं। सभी हितधारकों को वीडियो फिल्मों एवं सजीव प्रदर्शनों के माध्यम से विभिन्न कटाई-उपरांत प्रौद्योगिकियों से अवगत कराया गया। साथ ही, कटाई-उपरांत होने वाले नुकसान एवं अपव्यय के प्रति भी उन्हें संवेदनशील बनाया गया, जिन्हें उपयुक्त प्रौद्योगिकियों के उपयोग और नुकसान रोकने की प्रतिबद्धता से कम किया जा सकता है।

किसान दिवस समारोह का समापन इस सशक्त संदेश के साथ हुआ कि किसान केवल अन्नदाता ही नहीं, बल्कि विकसित भारत की यात्रा में साझेदार भी हैं। सशक्त किसान, मजबूत एफपीओ और आधुनिक ग्रामीण संस्थान कृषि में समृद्धि, लचीलापन एवं वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता प्राप्त करने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

भाकृअनुप – सीफेट
ICAR–CIPHET
ICAR CIPHET
Estd 1949